

'वीमा' नाटक की कथावस्तु का विवेचनात्मक अनुशीलन**डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे**प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शिवजागृति वरिष्ठ महाविद्यालय, नलेगाँव
ता.चाकुर जि.लातूर (महाराष्ट्र)

अपने सृजनात्मक जीवन में दलित, पीड़ित, विकलांग तथा निशक्तजनों की वाणी को मुखरित करनेवाले मेधावी प्रतिभा के धनी रत्नकुमार सांभरिया का जन्म हरियाणा के रेवाड़ी जिले के भाडावास गांव में 06 जनवरी 1956 को हुआ। रत्नकुमार सांभरिया ने कहानी, एकांकी, नाटक, लघुकथा, आलोचना, अनुवाद आदि विविध विधाओं पर लेखनी चलाकर हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने अंबेडकर जी की शिक्षा, संघर्ष तथा संघटन के मूलमंत्र को केंद्र में रखकर 'वीमा' नाटक की सृजना की है। 'वीमा' नाटक की कथावस्तु का विवेचनात्मक मूल्यांकन हम निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से कर सकते हैं। जैसे –

मूल संवेदना :- 'वीमा' नाटक दलित, पीड़ित, उपेक्षित, शोषित समाज की वेदना को स्पष्ट करता है। इस नाटक में विकलांग तथा निःशक्त युवकों की पीड़ा को मुखरित किया गया है। इस नाटक को देखने या पढ़ने के पश्चात पाठकों के मन में दलितों के प्रति सहानुभूति तथा शोषकों के प्रति घृणा का भाव उत्पन्न होता है।

आकर्षक कथावस्तु :-**'वी'**

मा' नाटक की कथावस्तु दो अंकों में विभाजित

होकर पहले अंक में तेरह दृश्य हैं और दूसरे अंक में बारह दृश्य हैं। इस नाटक की कथा के केंद्र में जमन वर्मा तथा वीमा है। अपनी आकर्षक कथावस्तु के कारण नाटक पाठकों को आरम्भ से लेकर आखिरतक अपनी ओर आकर्षित करने में सफल हुआ है। प्रभावपूर्णता, आकर्षकता, रोचकता, गतिशीलता, स्पष्टता सुबोधता और छोटे-छोटे संवादों ने कथावस्तु को सक्षम एवं रोचक बना दिया है।

प्रमुख पात्र :-

नाटक में प्रमुख नायक के रूप में जमन वर्मा तथा नायिका के रूप में वीमा का चित्रण किया गया है। इस नाटक में नेत्रहीन संस्था के संस्थापक श्यामाजी तथा नेता आका शोषक तथा दोमुँहे नेता के रूप में चित्रित हुए हैं, जो मानवता की सेवा की आड़ में निःशक्त तथा विकलांग लोगों का निरंतर शोषण कर रहे हैं। पुलिस तथा अखबार के संपादक सी.सी.झा भी नेताओं के दबाव में आकर उनकी चापलूसी करनेवाले पात्रों की तरह हैं। देवत सिंह जमन वर्मा का मित्र है, जो निशक्त तथा विकलांग होकर भी संगठन के

माध्यम से अन्याय के खिलाफ लड़ने का काम करता है और जमन वर्मा को न्याय देने में सफल भी होता है।

विकलांग तथा निःशक्तों की पीड़ा :-

इस नाटक में मुख्य रूप से विकलांग तथा निःशक्त युवक तथा युवतियों की पीड़ा और उनके प्रति समाज की उपेक्षा को नाटककार ने प्रस्तुत किया है। जमन वर्मा और वीमा दोनों विकलांग हैं और उनके साथी भी निशक्त और विकलांग हैं। उनकी उच्च वर्णीय लोगों द्वारा उपेक्षा तथा शोषण किया जाता है। जब जमन वर्मा रिक्शेवाले के साथ निशक्तजन कार्यालय में जाता है तब रिक्शेवाला वहां देखता है कि किसी के दोनों हाथ कटे हुए हैं, किसी के दोनों पैर पोलियो ने छीने हैं, तो किसी का हाथ कंधे से लटक रहा है। यहां तक की रिक्शेवाले के इस कथन से की बाबूजी, "वह मिनख तो और भी दुखियारा है। उसके दोनों पांव कटे हुए हैं। चार पहियों की लकड़ी की बैठकी पर बैठा है। दोनों हाथों में लकड़ी के गुटके हैं। सड़क पर टेकता चलाए आता है।"1 यह विकलांग तथा निशक्तों की पीड़ा को व्यक्त करता है।

जातिभेद की अनिष्ट परंपरा का विरोध :-

नाटक ने नाटक के माध्यम से समाज में प्रचलित जाति भेद की अनिष्ट परंपरा को भी उठाया है। श्यामाजी जैसे लोग समाज में हैं, जो जाति भेद की अनिष्ट परंपरा को बढ़ावा देते रहते हैं। जमन वर्मा को धमकाते हुए श्यामाजी का यह

कहना कि, "वह वीमा, तुम जमन वर्मा। वह जमींदार, तुम फाकामार। वह सिर, तुम चरण।" 2 यह जातिगत भेदभाव को स्पष्ट करता है। वैसे जमन वर्मा अनुसूचित जाति से है, तो वीमा उच्च वर्गीय ब्राह्मण जाति से है। यहां दोनों विकलांग और नेत्रहीन हैं। जाति को लेकर दोनों कोई भेद नहीं मानते। विवाह के समय जमन वर्मा वीमा को कहता है कि तुम ऊंची जात की, मैं नीची जात का। तुम सवर्ण, मैं दलित। मन में ऊंच-नीच का भेद रहते गृहस्थी की गाड़ी नहीं चल सकती, तो वीमा का उसे यह कहना कि, "छोड़ो भी जमन। पढ़े लिखे होकर जात की काप में पाँव मार रहे हो। तुम मरद हो, मैं औरत हूँ। दो जात। तुम नेत्रहीन, मैं नेत्रहीन। एक जात।" 3 यह जाति से भी ऊपर उठकर मानवता के विचारों की स्थापना करता है। लेकिन समाज में श्यामाजी जैसे कई उच्च वर्णीय नेता हैं, जो परंपरा से चलती आ रही अनिष्ट जाति परंपरा का पालन कर रहे हैं।

जमन वर्मा द्वारा वीमा की रक्षा :-

जमन वर्मा द्वारा वीमा को बचाने का प्रसंग नाटक में दृश्य सात से पूर्वदीप्ति शैली में नाटककार ने बताया है। जमन वर्मा जब रिक्शा से अपने मित्र देवत सिंह के पास जाता है। तब कहीं से बचाओ, बचाओ की आवाज आती है। कोई युवती को गुंडा छेड़छाड़ कर रहा था और उससे बचने के लिए वह चिल्ला रही थी। आवाज सुनते ही जमन वर्मा स्वयं नेत्रहीन होकर भी उसी आवाज की दिशा में पत्थर लेकर मारता है, जिससे वह गुंडा भाग जाता है। जमन वीमा के पास जाते हुए उसे कहता है, "हाँ-हाँ, मेरी आवाज की ओर चली आओ, धीरे-धीरे। बढ़ आओ। आ आओ। मत घबराओ। बिल्कुल मत घबराओ। डरो मत मुझसे। मैं भी तुम-सा ही हूँ, नेत्रहीन।... यहां से बचकर निकल चलो, जल्दी। गुंडा था, वो। अपनी जात- जमात ले आए। तुम नेत्रहीन। मैं नेत्रहीन। गुंडे बदमाशों से आँखोंवाले भी डरते हैं।" 4 इस प्रकार जमन वर्मा बड़ी चतुराई के साथ वीमा की गुंडे से रक्षा करता है और उसे अपने घर लाकर सहारा देता है।

वीमा की आपबीति :-

वीमा की रक्षा करने के पश्चात जमन वर्मा उसे जब अपने घर लेकर आता है, तब दोनों में वार्तालाप होता है। वीमा अपने बारे में बताती है कि, हमारा खाता पीता नामी-गिरामी घर है। जमीन है जायदाद है। मुझे मां नहीं है, तो क्या ? बाप है, दो भाई हैं, दोनों सर्विस में हैं, दो भावजें हैं, एक टीचर है दूसरी घर संभालती है। दो रोटियों के लिए घर-परिवार में

हाथी का पेट बन गई मैं। आंखें नहीं हैं, तो क्या हुआ जितना बनता मैं करती। बर्तन, भांडे धोना, बच्चों को नहलाना-धुलाना, स्कूल भेजना सब काम करती थी। लेकिन " मेरे घरवाले मेरी शादी एक अंधेड़ से करना चाहते थे। हाँ, जिनके साथ वे मेरी शादी करना चाहते थे। उनकी पत्नी की कोख पाट रह गई। दूसरी बीवी होती मैं, उनकी। हाँ, जमींदार हैं वे। धान की खेती होती है। उपजाऊ जमीन की भांति वे मुझे रखते। मैंने तो ताल ठोक कर ना कह दी।" 5 यहां वीमा की अपने ही परिवार में हुई उपेक्षा हमारे सामने आती है। साथ ही साथ स्वयं पर हुए अन्याय के प्रति विरोध का भाव भी स्पष्ट होता है।

श्यामाजी द्वारा जमन और वीमा का विवाह :-

नाटक में जमन वर्मा म्यूजिक के टीचर हैं, जो निशक्त संस्था के संस्थापक श्यामाजी की संस्था में अध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। श्यामाजी जमन वर्मा को अपने बेटे के समान मानते हैं। उन्होंने जमन वर्मा अनुसूचित जाति का होकर भी उसे अपने स्कूल में नौकरी दी, इतना ही नहीं उसे रहने के लिए एक कोठरी भी दी। जब वीमा को गुंडे से बचाकर जमन वर्मा अपने साथ लेकर आता है और अपनी कोठी में रखता है और श्यामाजी को यह सभी वृत्तांत बताता है, तो श्यामाजी एक दयालु व्यक्ति के समान जमन वर्मा को कहते भी हैं, वह भी नेत्रहीन, तुम भी नेत्रहीन। वह भी सुंदर, तुम भी सुंदर। हमउम्र हो। चाहो, शादी कर लो। अभिभावक मैं हूँ। इतना ही नहीं जमन वर्मा को कोर्ट मैरिज करने की सलाह देते हुए वे कहते हैं कि, " मियां-बीवी राजी, तो क्या करेगा काजी। जाओ, छुट्टी के बाद कोर्ट चले जाना और अपना फॉर्म लगा देना। पैसों की जरूरत हो, ले लेना। गवाह मैं भेज दूंगा।" 6 अतः श्यामाजी के इस बर्ताव के कारण जमन वर्मा के मन में उनके प्रति आदर की भावना उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है।

श्यामाजी द्वारा वीमा का अपहरण :-

एक दिन जमन वर्मा स्कूल से जब अपने घर आता है, तो कमरे में ताला देखकर घबरा जाता है। अपनी छड़ी द्वारा इधर-उधर टहलते हुए देखता है कि आंगन में बाहर कमरे का बक्सा, कपड़े अस्त-व्यस्त गिरे हुए हैं। वह परेशान हो जाता है और वीमा को पुकारता है लेकिन कोई उत्तर नहीं मिलता। वहीं पर उसे एक गमछा मिलता है जिसे हाथ में लेता है, तो पहचान लेता है कि वह गमछा श्यामाजी का ही है ऐसा उसे एहसास होता है। उसे इस बात का संदेह भी हो जाता है कि श्यामाजी द्वारा ही वीमा का अपहरण हो गया है।

वीमा को प्राप्त करने का जमन वर्मा का प्रयत्न :-

अपनी वीमा को घर में न पाकर वह तुरंत श्यामाजी के पास जाता है और वीमा के गुम होने की खबर श्यामाजी को देता है। इतना ही नहीं वह वीमा को ढूंढने की गुहार लगाता है। पुलिस थाने रिपोर्ट करवाने की इच्छा प्रकट करता है लेकिन श्यामाजी मानते नहीं। इतना ही नहीं श्यामाजी जमन वर्मा को जो हुआ उसे भूल जाने की सलाह देते हैं और उसे उसकी ही बिरादरी की किसी लड़की के साथ विवाह करने की सलाह भी देते हैं।

श्यामाजी की विवाह को लेकर सलाह तथा दबाव :-

श्यामाजी कहते हैं कि हमने सामूहिक विवाह का आयोजन किया है। वहाँ तुम अपना नाम दर्ज करो, फॉर्म भर दो और हम किसी तुम्हारी बिरादरी की लड़की के साथ तुम्हारा विवाह करेंगे। लेकिन जमन वर्मा ने तो सच्चे दिल से वीमा से प्रेम किया था। वह कहता है कि वह मेरी पत्नी है। मैं उसे नहीं भूल सकता कृपया उसे ढूंढो और मेरी सहायता करो। लेकिन श्यामाजी उसकी बात नहीं मानते और उसे ही धमकाते हुई कहते हैं, "जमन, आप भी समझ जाओ, ये लोग तालुकेदार हैं और संयोग से मेरे रिश्तेदार हैं। एक कागज लाए हैं, उसपर चुपचाप दस्तखत कर दो, अपने। यह कलम है। ठीक से पकड़ लो, इसे। नीब के नीचे कागज है, तलाक का कागज। इस पर हस्ताक्षर कर दो, अपने।" 7 तलाक के कागज पर उसके हस्ताक्षर लेकर वें जमन वर्मा को वीमा से हमेशा के लिए दूर करना चाहते हैं। सहायता के लिए जमन वर्मा अपने मित्र देवत सिंह के पास जाता है जो कि निशक्तजनों के संगठन का अध्यक्ष है। वह उसे लेकर बड़े आका के कार्यालय भी जाता है। लेकिन वहाँ भी उसे हताशा ही मिलती है। श्यामाजी ने जो कहा, वही आका ने कहा। दो कंठ, एक सुर। "यानी वीमा को भूल जाओ। निःशक्तों के सामूहिक विवाह में तुम्हारी जात-बिरादरी की किसी विकलांग लड़की के साथ तुम्हारा विवाह करा देंगे।" 8 इतना ही नहीं बड़े आका जमन वर्मा को प्रताड़ित करते हुए कहते हैं कि श्यामाजी को आप पहचानते नहीं उनकी संस्था को सरकार का पारितोषिक मिला है। वह उसके कर्तव्य के कारण और तुम उस पर इल्जाम लगा रहे हो। वहाँ से जमन वर्मा हताश होकर वापस आता है।

मित्र देवत सिंह की सहायता :-

जमन वर्मा अपने पर हुए अन्याय को लेकर श्यामाजी और आका के पास तो जाता है लेकिन वहाँ उनके द्वारा डाला गया दबाव और मिली उपेक्षा से हताश होकर अपने मित्र देवत

सिंह के पास जाता है। देवत सिंह विकलांग होकर भी संघटन के माध्यम से अन्याय का विरोध करते रहता है। जमन वर्मा को उसका यह कहना कि "जमन, ये आका हैं न, दोमुंहे हैं। उनको अपने चाहते चाहिए। ऐसे चाहते पैर चाटते रहें, पूंछ हिलाते रहें। निशक्तों की पीड़ा से, उनकी समस्याओं से, उनका दूर-दूर तक लेना देना नहीं है।" 9 यह उसके न्याय के पक्षधर्ता को व्यक्त करता है। देवत सिंह न्याय देने के लिए जमन की सहायता तो करता है, साथ ही साथ श्यामाजी और आका के खिलाफ थानेदार के पास रिपोर्ट लिखवाने और अखबार में इस अन्याय की खबर छपवाने की बात भी करता है। इतना ही नहीं न्याय के लिए वह आखिर तक जमन वर्मा की सहायता करता है और उसको न्याय दिला कर ही रहता है।

मीडिया का रवैया :-

जमन वर्मा और उसका मित्र देवत सिंह अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाने के लिए अखबार के संपादक सी.सी. झा को जाकर मिलते हैं और अपनी पूरी आपबीती उन्हें सुनाते हैं। सुनते ही वह पहले श्यामाजी के खिलाफ आवाज उठाने की बात करता है लेकिन जैसे ही वह श्यामाजी के कार्यालय में पहुंचता है और श्यामाजी उन्हें कहते हैं कि, "बेटे, आपकी शिराओं में भी उसी जाति का रक्त है, जो मेरी शिराओं में बह रहा है। झा बेटे, दुर्योग रहा लड़की मेरी रिश्तेदार निकल आई। नीची जाति का जमन वर्मा मेरे स्कूल में टीचर ! उसकी पत्नी मेरी रिश्तेदार ! बेटे, आँखें देखे मक्खी नहीं निगली जाती !" 10 यह सुनते ही पत्रकार झा का विचार बदल जाता है। वह अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए श्यामा जी से कहता है, "श्यामाजी आका के दफ्तर में अपने एक आदमी का ट्रांसफर करवाना है। सेवक है, अपना। काम होना चाहिए।" 11 और वह अखबार में अन्याय के खिलाफ सच्चाई लिखने के बजाय 'नेत्रहीन ने जात छुपाकर ब्याह रचाया, पत्नी को तलाक चाहिए' इस शीर्षक से जमन वर्मा के ही खिलाफ झूठ साबित करते हुए लिखता है। आज भी कई अखबारों के संपादक हैं, जो सत्ताधारी तथा अमीरों की हां में हां मिलाते हैं।

पुलिस का रवैया :-

मीडिया की तरह पुलिस का रवैया न्याय के पक्ष में नहीं दिखाई देता। जब देवत सिंह जमन वर्मा को थानेदार के पास ले जाता है और श्यामाजी के खिलाफ रिपोर्ट लिखने की बात करता है, तो पहले वह श्यामाजी के खिलाफ अर्जी लिखकर लेता है लेकिन श्यामाजी और आका द्वारा थानेदार को रिश्त

देते ही थानेदार का न्याय का साथ छोड़कर श्यामाजी का पक्ष लेते हुए जमन वर्मा को ही धमकाते हुए कहना कि, "ये कम दया है क्या, तुम दोनों विकलांग हो। और होते, अन्दर ले जाकर ऐसी पिटाई करता, ऐसी पिटाई करता, ऐ-बे सब भूल जाते। रसालों, विकलांग हो या उचक्के ? जी हुकुम के बच्चे। रसाले, अंधे, लंगड़े-लूले भी बड़े घरों की लड़कियों को धोखा देकर उनसे शादी रचाने लगे। ज्यादाती करने लगे। गुंडे कहीं के।" 12 यह न्याय देनेवाले पुलिस प्रशासन का रिश्तखोरी और शोषणवाला रवैया हमारे सामने आता है।

निःशक्तों के संघटन से यश :-

नाटक के आखिर में संगठन के जोर लगाने से पूरे निःशक्तजन एकत्रित हो जाते हैं। "न केवल शहर के ही, बल्कि दूर-दराज के गांवों के निःशक्त आ डटे हैं, यहां। उनका आना अनवरत जारी है। नारे लग रहे हैं। निःशक्तों में जबरदस्त गुस्सा है, आका के खिलाफ। निःशक्त चारों ओर बैठे हैं, अपना अपना आक्रोश लिए।" 13 और आका के कार्यालय के सामने धरना देने से हारकर श्यामाजी और आका वहां आ जाते हैं और मजबूरन वीमा को जमन वर्मा के पास लौटा देते हैं। आखिर में यहां न्याय की जीत होती है और सभी अपना हाथ उठाएं "निःशक्तजन एकता...। जिंदाबाद ! जिंदाबाद !! जिंदाबाद !!!" 14 के नारे लगाते हैं और नाटक अन्याय तथा शोषण का दमन करता हुआ समाप्त होता है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार रत्नकुमार सांभरिया द्वारा लिखित 'वीमा' नाटक की कथावस्तु आरंभ से लेकर अंत तक पाठक को अपनी ओर आकर्षित करती है। 'वीमा' नाटक पर गहन चिंतन करने के पश्चात कुछ निष्कर्ष बिंदु हमारे सामने आते हैं। जैसे-

- यह कथावस्तु दलितों की तथा निःशक्त और विकलांगों की समाज के द्वारा हो रही उपेक्षा को व्यक्त करती है।
- नाटककार ने इस नाटक के माध्यम से निःशक्त एवं विकलांगों के प्रति पाठक के हृदय में सहानुभूति निर्माण करने में सफलता पाई है।
- इस कथावस्तु के माध्यम से सच्चे प्रेम की अभिव्यक्ति होती है।
- सवर्ण और दलित की यह सामाजिक दीवार किस प्रकार प्रेम के बीच दीवार बनकर खड़ी हो जाती है इसे यह कथावस्तु प्रस्तुत करती है।

- प्रशासन व्यवस्था और अखबार भी किसी प्रकार पैसों तले बिक गए हैं, जो न्याय के पक्षधर न होकर अन्याय के ही पक्षधर बन गए हैं। यही इस कथावस्तु से व्यक्त होता है।
- संघटनात्मक कार्य से किसी भी समस्या को सुलझाया जा सकता है यह संकेत नाटककार ने इस नाटक के अंत में दिया है।
- नाटककार ने इस नाटक के माध्यम से सामाजिक भेद को नष्ट कर समानता का पक्ष लेते हुए मानवता को स्थापित करने का प्रयास किया है, जिसमें उसे सफलता भी मिली है।

कुलमिलाकर यहाँ विकलांगों की समस्याओं को उद्घाटित करते हुए उनपर हो रहे अन्याय-अत्याचारों का विरोध करते हुए नाटककार ने बखूबी के साथ नाटक के अंत में नायक जमन वर्मा को उसकी प्रेमिका वीमा से मिलवाकर यश दिलवाया है। यह नाटक की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

संदर्भ सूची :-

- 1) रत्नकुमार सांभरिया - वीमा - श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली - पृ. 24
- 2) रत्नकुमार सांभरिया - वीमा - श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली - पृ. 18
- 3) रत्नकुमार सांभरिया - वीमा - श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली - पृ. 46
- 4) रत्नकुमार सांभरिया - वीमा - श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली - पृ. 33
- 5) रत्नकुमार सांभरिया - वीमा - श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली - पृ. 40
- 6) रत्नकुमार सांभरिया - वीमा - श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली - पृ. 44-45
- 7) रत्नकुमार सांभरिया - वीमा - श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली - पृ. 20
- 8) रत्नकुमार सांभरिया - वीमा - श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली - पृ. 61
- 9) रत्नकुमार सांभरिया - वीमा - श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली - पृ. 53
- 10) रत्नकुमार सांभरिया - वीमा - श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली - पृ. 68
- 11) रत्नकुमार सांभरिया - वीमा - श्री नटराज प्रकाशन,

दिल्ली - पृ. 69
12) रत्नकुमार सांभरिया - वीमा - श्री नटराज प्रकाशन,
दिल्ली - पृ. 70

13) रत्नकुमार सांभरिया - वीमा - श्री नटराज प्रकाशन,
दिल्ली - पृ. 78
14) रत्नकुमार सांभरिया - वीमा - श्री नटराज प्रकाशन,
दिल्ली - पृ. 80

